पञ्चपरमेष्ठी आरती

(कविवर द्यानतराय जी)

इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे ।
पहली आरती श्री जिनराजा, भव-दधि-पार-उतार - जिहाजा ।।
इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे ।

दूसरी आरती सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटे भव - फेरी ।।
इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे ।

तीसरी आरती सूर मुनिंदा, जनम-मरन-दुख दूर करिंदा ।।
इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे ।

चैथी आरती श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया ।।
इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे ।

पांचवीं आरती साधु तिहारी, कुमति विनाशन शिव-अधिकारी ।।
इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे ।

छट्ठी ग्यारह प्रतिमाधारी, श्रावक वंदों आनँद-कारी ।।
इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे ।

सातवी आरती श्री जिनवानी, "द्यानत" सुरग-मुकति - सुखदानी।।
इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे ।

सोने का दीप कर्पूर की बाती, जगमग जगमग होवे सारी राती ।
सांझ सवेरे आरती कीजे, अपनो जनम सफल कर लीजे ।।
जो कोई आरती करे करावे, सो नर-नारी अमर पद पावे ।
इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद भज सुख लीजे।।